आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2018-20

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 6 अंक : 9 मई-2019 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. (डॉ.) विष्णु शर्मा

कुलपति सन्देश

रेगिस्तान में हरीतिमा और पशु आहार के लिए सेवण घास का विस्तार जरूरी

प्रिय, पशुपालक एवं किसान भाइयों और बहनो !

राम–राम सा।

सुरक्षित धरती और संरक्षित पर्यावरण की शपथ लेकर हाल ही में 22 अप्रेल को पृथ्वी दिवस मनाया गया। हमने संकल्प लिया है कि जीवनदायिनी धरती को हानि नहीं पहुंचायेंगे। वन पर्यावरण की रक्षा करेंगे, जल का संरक्षण, नए प्रदूषण मानक वाले वाहनों का उपयोग करके कचरा प्रबंधन को अपनाएंगे और प्लास्टिक कैरी बैग का उपयोग नहीं करेंगे। पृथ्वी दिवस –2019 को हमारी प्रजातियों को सुरक्षित करने की थीम पर मनाया जा रहा है। ब्रह्मांड में पृथ्वी ही एक ऐसा ग्रह है, जहां पर आज तक जीवन संभव है। अतः हम सबका कर्त्तव्य है कि यहां के प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा करके जीव–जगत के अस्तित्व को बरकरार रखा जा सके। हमारा प्रयास है कि पृथ्वी पर हरीतिमा (ग्रीन) बढ़े। पानी का सदुपयोग कर हरीतिमा विकसित करना हमारा ध्येय है। इससे पशुधन के लिए चारे की उपलब्धता बढ़ेगी। इसके मद्देनजर वेटरनरी विश्वविद्यालय फार्म पर मरूस्थलीय क्षेत्र के लिए वरदान सेवण घास की पौध को तैयार करने का नवाचार शुरू किया गया है। इसकी प्रारंभिक सफलता को देखते हुए इस कार्य को वेटरनरी विश्वविद्यालय में प्राथमिकता से आगे बढ़ाया जाएगा। इससे मरूस्थलीय प्रसार को रोकने और पशुधन के लिए चारे की उपलब्धता को सुनिश्चित किया जा सकेगा। सेवण के सघन पौधारोपण को वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा सालभर तक एक अभियान के रूप में चलाया जाएगा। इस तकनीक से गोशालाओं व वन विभाग के सहयोग से सेवण घास का प्रदेश में क्षेत्रफल बढ़ाया जाएगा। इससे अर्द्ध शुष्क मरूस्थलीय क्षेत्र में आमूल–चूल परिवर्तन लाया जा सकेगा। सेवण एक बहुवर्षीय घास है और यह अच्छे विकसित जड़ राइजोमस तंत्र के कारण सूखा सहन कर सकती है, जिससे यह रेतीली भूमि के उन क्षेत्रों में जहां वार्षिक वर्षा 100 से 130 मि.मी. तक होती है, आसानी से उगती है। इसलिए सेवण घास को घास क्षेत्र में ''घासों का राजा'' कहा जाता है। सेवण एक बहुमूल्य घास है जो वानस्पतिक क्षेत्र बनाती है। जानवरों के लिये चारा प्रदान करती है व भूमि के क्षरण को रोकती है और भूमि की उत्पादन क्षमता बढ़ाती है। सेवण घास प्रायः हल्की चूनायुक्त रेतीली भूमि व रेतीले टिब्बों के लिए उपयुक्त है। दोमट बलूई भूमि में यह आसानी से उगती है। पश्चिमी राजस्थान की दुधारू थारपारकर गाय मुख्यतः इसी सेवण घास पर निर्भर है। यह पशुओं के लिए पाचक व पोषक घास है। बढ़वार की प्रारंभिक अवस्था में भेड़ बकरियां इसे बड़े चाव से खाते हैं। पोषण में बाधक तत्व नही के बराबर होते हैं, जिससे इस घास को बढ़वार की प्रारम्भिक अवस्था में पशुओं को बेझिझक खिलाया जा सकता है। बहुत विकसित जड़ तंत्र के कारण यह घास दशकों तक जीवित रहती है। सभी किसान और पशुपालक भाइयों से आग्रह है कि वे अपने गांव, खेत, पायतान, जोहड़, चारागाहों में सेवण का रोपण और संरक्षण करें।

जय हिन्द!

(प्रो. (डॉ.) विष्णु शर्मा)

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।

–महात्मा गांधी

मुख्य समाचार

एन.सी.सी. दस्ते ने निकाली मतदाता जागरूकता रैली

वेटरनरी विश्वविद्यालय की 1 राज आर एण्ड वी स्क्वाड्रन एन.सी.सी., के कैडेट्स, एन.एस.एस. और भारत स्काउट गाईड के 250 स्वयं सेवकों ने जनता को जागरूक करने के लिए 5 अप्रेल को मतदाता जागरूकता रैली का आयोजन किया गया। राज्य के मुख्य निर्वाचन अधिकारी श्री आनन्द कुमार ने कलेक्ट्रेट परिसर में आयोजित एक समारोह में सभी को मतदान की शपथ दिलवाई। इससे पूर्व भव्य परेड का नेतृत्व 1 राज आर एण्ड वी स्क्वाड्रन एन.सी.सी. बीकानेर के कमांडिग ऑफिसर अशोक सिंह राठौर ने किया। यह रैली कलेक्ट्रेट से जूनागढ होते हुये नगर निगम, कीर्ति स्तम्भ, दीनदयाल सर्किल से राजुवास कैम्पस में समाप्त हुई। इस दौरान राजुवास के रजिस्ट्रार ए.एस. राजावत तथा अधिष्ठाता प्रो. राकेश राव उपस्थित थे।

एन.आई.आर.एफ. रैंकिंग 2019
वेटरनरी विश्वविद्यालय फिर शीर्ष पर
देश के प्रथम तीन वेटरनरी विश्वविद्यालयों में हुआ शरीक

राजस्थान वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर ने भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा जारी नेशनल इंस्टीट्यूशनल रैंकिंग फ्रेमवर्क की इंडिया रैंकिंग–2019 में देश के पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालयों में शीर्ष और राजस्थान के राजकीय विश्वविद्यालयों की कैटेगेरी में प्रथम स्थान बनाया है। वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर राज्य का एक मात्र राजकीय विश्वविद्यालय है जिसने एन.आई.आर.एफ.–2019 में राज्य वित्त पोषित कैटेगेरी में अपना प्रथम स्थान बनाने में कामयाबी हासिल की है। इसके साथ ही इस बार देश के पहले तीन सर्वश्रेष्ठ पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय में यह विश्वविद्यालय शामिल हुआ है। राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद द्वारा 8 अप्रेल को विज्ञान भवन, नई दिल्ली में इस रैंकिंग की घोषणा की गई। पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालयों की कैटेगेरी में यह वेटरनरी विश्वविद्यालय पूरे देश के तीन शीर्ष विश्वविद्यालयों में शुमार हुआ है। देश के 1479 विश्वविद्यालयों की रैंकिंग में राजुवास 101–150 की रैंकिंग में शामिल हुआ है। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने बताया कि राजस्थान वेटरनरी विश्वविद्यालय पशुचिकित्सा शिक्षण, अनुसंधान और प्रसार शिक्षा में आशातीत वृद्धि करके देश के शीर्ष विश्वविद्यालयों में आ गया है, इससे समाज में इसकी उपयोगिता को बल मिला है। कुलपति प्रो. शर्मा ने राजुवास टीम की मेहनत, लगन और निष्ठा के कारण मिली इस उपलब्धि के लिए उन्हें बधाई दी है। विश्वविद्यालय की इस उपलब्धि से शिक्षकों, कर्मचारियों और विद्यार्थियों में हर्ष की लहर व्याप्त हो गई।

इन्टर्नशिप छात्र–छात्राओं का ऑरियेन्टेशन सम्पन्न

वेटरनरी विश्वविद्यालय के संघटक महाविद्यालयों के वर्ष 2019 के इन्टर्नशिप विद्यार्थियों का एक दिवसीय ऑरियेन्टेशन कार्यक्रम 8 अप्रेल को आयोजित किया गया। इस ऑरियेन्टेशन में वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर के 78 और वेटरनरी कॉलेज नवानियां, उदयपुर के 88 स्नातक छात्र–छात्राओं ने भाग लिया। इन्टर्नशिप कार्यक्रम के मुख्य अतिथि वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने कहा कि पशुचिकित्सा जैसे महान व्यवसाय में जाने के लिए इन्टर्नशिप एक महत्वपूर्ण पड़ाव है। इन्टर्नशिप भारतीय चिकित्सा परिषद् के निर्देशानुसार आवश्यक है। उन्होंने कहा कि वेटरनरी ग्रेजुएट पशुधन उत्पादों और खाद्य सुरक्षा और पशुधन के अभिरक्षक हैं। इसके लिए पशु फार्म, औद्योगिक इकाइयों, अभ्यारणों, स्वंयसेवी संगठनों अथवा पशु नैदानिक प्रयोगशालाओं में कार्य के विपुल अवसर मौजूद हैं। इन्टर्नशिप के लिए राज्य में पशुपालन विभाग की पोली–क्लिनिक्स, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर और नवानियां के परिसर निर्धारित किए गए हैं। उन्होंने विद्यार्थियों का आह्वान किया कि वे मनोयोग से इन्टर्नशिप पूरी करके अपने उज्जवल भविष्य की नींव रख सकते हैं। कार्यक्रम में राजुवास के संकाय अध्यक्ष प्रो. राकेश राव, वेटरनरी कॉलेज, नवानियां (उदयपुर) के अधिष्ठाता प्रो. राजेश कुमार धूड़िया और स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, जयपुर की अधिष्ठाता प्रो. संजीता शर्मा ने भी इन्टर्नशिप के महत्व पर विचार रखकर विद्यार्थियों के उज्जवल भविष्य की कामना की। इन्टर्नशिप कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. प्रवीण बिश्नोई ने बताया कि 6 माह की इन्टर्नशिप के दौरान प्रत्येक इन्टर्नी को पशु चिकित्सालयों पशु फार्म, पशु नैदानिक प्रयोगशालाओं, वन्य जीव अभ्यारणों में सेवाएं देनी होगी। डॉ. आर.के. तँवर ने इन्टर्नशिप पर एक व्याख्यान प्रस्तुत किया।

शिक्षण पद्धतियों पर ऑरियेन्टेशन कार्यक्रम संपन्न
वेटरनरी विश्वविद्यालय को विश्वस्तरिय बनाने की जरूरतः पूर्व कुलपति डॉ. गहलोत
संस्थान के प्रति कर्तव्य निष्ठा और लगन से ही प्रगति सम्भवः कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा

वेटरनरी विश्वविद्यालय के 33 नवागंतुक सहायक प्राध्यापकों का शिक्षण पद्धतियों पर 21 दिवसीय ऑरियेन्टेशन कार्यक्रम 17 अप्रेल को संपन्न हो गया। ऑरियेन्टेशन के अंतिम दिन वेटरनरी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने राजुवास को एक विश्वस्तरीय विश्वविद्यालय बनाने के लिए निर्धारित मापदण्ड़ों पर तथा प्रो. विष्णु शर्मा ने "पशुधन और जलवायु परिवर्तन" विषय पर सहायक प्राध्यापकों के समक्ष विशेष व्याख्यान प्रस्तुत किए। डॉ. गहलोत ने कहा कि राजुवास ने तेजी से आगे बढ़ते हुए प्रमुख संस्थानों में अपनी जगह बनाई हैं। विद्यार्थी और फैकल्टी की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और अनुसंधान के साथ ही जलवायु परिवर्तन, ऊर्जा, खाद्य और स्वास्थ्य जैसे मुद्दों को शिक्षा में शामिल करने से ही सार्थक परिणाम आयेंगे। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने कहा कि संस्थान के प्रति मन से जुड़ाव और कार्य के प्रति निष्ठा और लगन से ही प्रगति संभव है। उन्होंने नवागंतुक सहायक प्राध्यापकों का आह्वान किया कि वे राजुवास की तरक्की के संवाहक बनें। कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा और डॉ. ए.के. गहलोत ने सभी संभागियों को प्रमाण–पत्र प्रदान किए। प्रसार शिक्षा निदेशक और प्रशिक्षण समन्वयक प्रो. ए.पी. सिंह ने बताया कि 21 दिन तक 33 संभागियों के लिए शैक्षणिक दक्षता, प्रभावी शिक्षा, प्रशासनिक–वित्तीय कुशलता और व्यक्तित्व विकास के लिए सम्बद्ध

विषय–विशेषज्ञों के 51 व्याख्यान आयोजित किये गए। साथ ही फील्ड विजिट करवाई गई।

युवा जीवन के अवसरों का उपयोग करने के लिए सचेष्ट रहें: कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा

वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्लैसमेंट सैल द्वारा छात्र–छात्राओं और संकाय सदस्यों के लिए 16 अप्रेल को प्रेरणादायी संगोष्ठी का आयोजन किया गया। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा की अध्यक्षता में आयोजित प्रेरक सेमीनार में एन.सी.सी. के ग्रुप कमांडर कर्नल सुधांशु शर्मा एवं सहायक कमांडेन्ट बी.एस.एफ. तनुश्री पारीक ने अपने प्रेरणादायी उद्‌बोधन दिये। सीमा सुरक्षा बल में देश की प्रथम महिला सहायक कमांडेंट तनुश्री पारीक ने कहा कि उन्होंने अर्द्धसैनिक बल की चुनौतिपूर्ण सेवाओं को अपने कैरियर के रूप में चुना है। मजबूत इरादा रखने वाले अपनी मंजिल पा लेते हैं। हर एक व्यक्ति में विपुल संभावनाएं विद्यमान हैं। अतः आत्मावलोकन कर उनको निखारने की जरूरत है। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि तनुश्री ने अपने हौसले और मेहनत से सीमा सुरक्षा बल में पहली महिला अधिकारी के रूप में प्रवेश कर इतिहास रचा है। उन्होंने युवाओं से आग्रह किया वे जीवन में अवसरों का उपयोग करने के लिए सचेष्ट रहें। पशुचिकित्सा शिक्षा में दक्षता के साथ ही पाठ्योत्तर प्रवृत्तियों में भी शामिल होकर उज्ज्वल भविष्य की और कदम बढ़ा सकते हैं। एन.सी.सी. जोधपुर के ग्रुप कमांडर कर्नल सुधांशु शर्मा ने कहा कि आज के युग में कैरियर निर्माण के बहुत सारे विकल्प मौजूद है। युवाओं को अवसरों का लाभ और चुनौतियों को स्वीकार करने का जज्बा होना चाहिए। उन्होंने छात्राओं का आह्‌वान किया कि वे 1 राज आर. एण्ड़ वी. में अधिक से अधिक संख्या में शामिल होवें। वेटरनरी कॉलेज के अधिष्ठाता प्रो. राकेश राव ने सभी का स्वागत किया। सहायक अधिष्ठाता छात्र कल्याण डॉ. अशोक डांगी ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

पृथ्वी दिवस का आयोजन

पृथ्वी पर हरीतिमा बढ़ाने के साथ मरूस्थलीय प्रसार को रोकती है सेवण घास : कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा

वेटरनरी विश्वविद्यालय के पशुधन चारा संसाधन प्रबंधन एवं तकनीक केन्द्र के फार्म पर कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने विद्यार्थियों, फैकेल्टी सदस्यों, कर्मचारियों और डीन–डॉयरेक्टर को पृथ्वी दिवस के उपलक्ष सुरक्षित धरती और संरक्षित पर्यावरण की शपथ दिलाई। इस अवसर पर कुलपति प्रो. शर्मा ने कहा कि पृथ्वी दिवस पूरे विश्व के साथ राजुवास के सभी महाविद्यालयों में मनाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि हम सबका प्रयास है कि पृथ्वी पर हरीतिमा (ग्रीन) बढ़े। पानी का सदुपयोग कर हरीतिमा विकसित करना हमारा ध्येय है। इससे पशुधन के लिए चारे की उपलब्धता बढ़ेगी। इससे पूर्व कुलपति प्रो. शर्मा ने केन्द्र में सेवण घास की पौध तैयार करने के अनुसंधान कार्यों की जानकारी ली। उन्होंने निर्देशित किया कि इस कार्य को बड़े पैमाने पर करने के लिए पीजी, यूजी, पीएचडी छात्रों का भी सहयोग लिया जाए। कुलपति प्रो. शर्मा ने कहा कि सेवण के सधन पौधारोपण को वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा सालभर तक एक अभियान के रूप में चलाया जाएगा। इस तकनीक से गोशालाओं व वन विभाग के संयोग से सेवण घास का प्रदेश क्षैत्रफल बढ़ाया जाएगा। इससे अर्द्ध शुष्क मरूस्थलीय क्षेत्र में आमूल–चूल परिवर्तन लाया जा सकेगा। यह अभियान पशुधन चारा संसाधन प्रबंधन एवं तकनीक केन्द्र के प्रमुख अन्वेषक डॉ. दिनेश जैन की देख रेख में होगा।

विश्व पशुचिकित्सा दिवस

युवा पशुचिकित्सक समाज के आर्थिक उत्थान में सक्रिय भागीदारी निभाए: कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा

वेटरनरी विश्वविद्यालय के तीनों संगठक महाविद्यालयों में "टीकाकरण का महत्व" विषय पर "विश्व पशुचिकित्सा दिवस" 27 अप्रेल को समारोह पूर्वक आयोजित किया गया। स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान (पी.जी.आई.वी.ई.आर.), जयपुर में कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. विष्णु शर्मा, कुलपति, वेटरनरी विश्वविद्यालय ने इस महान दिवस पर पशुचिकित्सकों और छात्र–छात्राओं को बधाई देते हुए कहा कि पशुचिकित्सा एक महान प्रोफेसन है और हमारा यह कर्तव्य बनता है कि हम देश कि आर्थिक उन्नति में अधिक से अधिक से अधिक भागीदारी दें। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि डॉ. शै लेश शर्मा, निदेशक, पशुपालन विभाग, प्रो. संजीता शर्मा, अधिष्ठाता, पी.जी.आई.वी.ई.आर., जयपुर, प्रो. राकेश राव, अधिष्ठाता एवं संकायाध्यक्ष, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, प्रो. आर.के. धूड़िया, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, उदयपुर ने इस कार्यक्रम में अपने विचार व्यक्त किए। अतिथियों द्वारा इस अवसर पर आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। पशुचिकित्सा महाविद्यालय, बीकानेर में कार्यकारी अधिष्ठाता प्रो. हेमन्त दाधीच ने इस दिवस पर वाग्मिता, क्विज और पोस्टर प्रतियोगिता के विजेता छात्र–छात्राओं को पुरस्कृत किया एंव सभी को इस दिवस की बधाई दी। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता प्रो. आर.के. तँवर ने टीकाकरण के महत्व विषय पर व्याख्यान दिया एवं कहा की पशुचिकित्सकों का कर्तव्य है कि वे पशुपालकों को टीकाकरण के महत्व के बारे में जागरूक करें ताकि पशुओं को होने वाले संक्रामक रोगों से बचाया जा सकें। प्रो. जे.एस. मेहत्ता, निदेशक क्लिनिक ने इस अवसर पर सम्बोधित किया। पशुचिकित्सा महाविद्यालय, उदयपुर में डॉ. एस.के. शर्मा ने "टीकाकरण के महत्व" विषय पर व्याख्यान दिया। तीनों सगंठक महाविद्यालय में बड़ी संख्या में शिक्षकों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया।

प्रशिक्षण समाचार

वीयूटीआरसी चूरू द्वारा 233 पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, चूरू द्वारा 4, 5, 9, 10, 16, 20, 22, 23 एवं 24 अप्रेल को गांव ढाणी कुम्हारान, बोघेरा, ढाणी डूंगरसिंहपुरा, देपालसर, राणासर, गोगटिया चारनाण, रामसरा, चलकोई एवं थैलासर गांवों में तथा 11 अप्रेल को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 107 महिला पशुपालकों सहित कुल 233 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) केन्द्र में प्रशिक्षण आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) द्वारा 4, 5, 8, 9, 18 एवं 20 अप्रेल को गांव 8 एपीडी, जीवनदेसर, दोलतपुरा, 15जेड, 27ए एवं खरला गांवो में तथा दिनांक 23 अप्रेल को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 25 महिला पशुपालकों सहित कुल 232 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

सिरोही में 304 पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सिरोही द्वारा 3, 4, 5, 8, 15, 16, 18, 20, 23 एवं 25 अप्रेल को गांव भैंसासिंह, मकावल, माण्डवाडा देव, देवली, बडगांव, बूटडी, नवावास देव, आम्बावेरी, देलदर एवं सतासर गांवो में तथा दिनांक 11 एवं 27 अप्रेल को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 304 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

बाकलिया (नागौर) केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बाकलिया–लाड़नू द्वारा 5, 9, 10, 11, 15, 16 एवं 18 अप्रेल को गांव लैंडी, बालसंमद, रोडू, पदमपुरा, कुसुम्बी एवं श्यामपुरा गांवों में तथा दिनांक 22 एवं 23 अप्रेल को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 214 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

अजमेर केन्द्र द्वारा पशुपालक प्रशिक्षण शिविर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, अजमेर द्वारा 9, 15, 16, 18, 20, 22, 23 एवं 24 अप्रेल को गांव उंटड़ा, आलोली, शिवनाथपुरा, भैरूखेडा, किटाप, बीर, रघुनाथपुरा एवं रामालिया गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 233 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, डूंगरपुर द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 5, 8, 12, 15, 18, 20 एवं 24 अप्रेल को गांव नवागारा, मांडवा, शिवपुरा, डिमिया, गमेती फलां, रेडा, खापरडा एवं माडा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 250 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कुम्हेर (भरतपुर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा 2, 3, 4, 8, 10, 11, 16, 18, 24 एवं 25 अप्रेल को गांव जटेरी, खडैरा, धुलवास, कुन्डा, करीली, नगला श्रीपुर, सबौरा, पचौर, सलैमपुर खुर्द एवं कैलूरी गांवो में तथा दिनांक 22 एवं 27 अप्रेल को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 10 महिला पशुपालकों सहित कुल 188 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

टोंक जिले में पशुपालकों का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, टोंक द्वारा 8, 10, 18, 20, 22, 23, 24 एवं 25 अप्रेल को गांव खन्देवत, तुर्किया, श्रीरामपुरा, हिगोंनिया, किवाड़ा, चैनपुरा, सेंदरिया एवं भांवता गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 203 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

लूनकरणसर (बीकानेर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, लूनकरणसर द्वारा 8, 9, 10, 15, 20 एवं 22 अप्रेल को गांव बम्बलू, उदासर, पेमासर, जामसर, बामनवाली एवं किस्तुरिया गांवों में तथा दिनांक 24 अप्रेल को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 200 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी कोटा द्वारा 279 पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कोटा द्वारा 9, 11, 12, 15, 16, 18, 20, 24, 25 एवं 26 अप्रेल को गांव पारलिया, डूंगरज्या, करिका खेड़ा, घघटाना, पीपल्दा, गोपालपुरा, पोलाई खुर्द, कालारेवा, नगपुरा एवं चडिण्दा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 279 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

बोजुन्दा (चितौड़गढ़) केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बोजुन्दा (चितौड़गढ) द्वारा 3, 4, 5, 8, 10, 12, 15, 18 एवं 22 अप्रेल को गांव गणेशपुरा, मानपुरा, घारोल, सतपुडा, चांदखेड़ा, पारलिया, रावलिया, अरनिया जोशी एवं मरजीवी गांवों में तथा दिनांक 9 एवं 23 अप्रेल को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 263 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, धौलपुर द्वारा पशुपालकों का प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 5, 9, 10, 11, 12, 15, 16, 20 एवं 23 अप्रेल को गांव महोरी, सकतपुर, बुधपुरा, बमरोली, डरूपुरा, कूकपुर, कोटरा, बहवलपुर एवं कुतकपुर गांवों में तथा दिनांक 25 एवं 26 अप्रेल को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 262 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, जोधपुर द्वारा पशुपालक प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, जोधपुर द्वारा 4, 5, 8, 11, 12, 18, 22, 23, 24 एवं 25 अप्रेल को गांव जालेली चम्मपावतान, सालावास, जटियावास, तनावड़ा, सांगरिया, भाकरासनी, उचियाडा, सिरियादे गांव, पिथावास एवं नान्दड़ा कला गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 95 महिला पशुपालकों सहित कुल 239 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

दुधारू पशुओं में जेर रूकने के कारण, लक्षण एवं प्रबंधन

गर्भावस्था के दौरान ग्याभिन पशु एवं गर्भ में पल रहे शिशु पशु के मध्य एक संरचनात्मक एवं कार्यात्मक इकाई का निर्माण होता है। जिसे अपरा या जेर या प्लेसेंटा कहते हैं। जिसके कार्य निम्न है–

1. गैसों का परिवहन : गर्भावस्था के दौरान शिशु को ऑक्सीजन व कार्बन डाई ऑक्साईड के परिवहन में मदद करना।
2. शिशु को विभिन्न पोषक तत्व उपलब्ध करवाना जिससे शिशु की समुचित वृद्धि हो सके।
3. गर्भस्थ शिशु को विभिन्न रोगों से लड़ने हेतु इम्यूनोग्लोबिन–जी प्रतिरक्षी के रूप में रोग–प्रतिरोधक क्षमता उपलब्ध करवाना।
4. गर्भस्थ शिशु के शरीर में बने बिलरूबिन व अन्य अपशिष्ट को बाहर उत्सर्जित करवाना।
5. अपरा के द्वारा उत्सर्जित हार्मोन्स जैसे प्लेसेन्टल लेक्टोजन एवं रिलेक्सीन आदि हैं जो न केवल गर्भावस्था को बनाये रखने में मदद करते हैं अपितु गर्भकाल पूर्ण होने पर प्रसव में भी सहयोग करते हैं।

दुधारू पशुओं में ब्याने/प्रसव के बाद जेर सामान्यतः 3–8 घंटे में स्वतः ही गिर जाती है। परन्तु यदि प्रसव के 8–12 घंटे बाद भी जेर या अपरा ना गिरे तो इसे जेर का अटकना या रिटेंसन ऑफ प्लेमेंटा कहा जाता है।

जेर या अपरा अटकने के मुख्य कारण:

1. गर्भकाल पूर्ण होने से पूर्व प्रसव।
2. लम्बे समय तक कष्ट पश्चात प्रसव।
3. गर्भस्थ शिशु पशु का प्रसव के समय गर्भ में अपनी सामान्य स्थिति में ना होना जिससे प्रसव ना हो पाना एवं उसे मानवीय सहायता से सही कर प्रसव करवाना।
4. गर्भपात
5. पोषक तत्व जैसे कैल्सियम, विटामिन–ई सैलिवियम आदि की कमी।
6. प्रसव कराने में मददगार हार्मोन्स का असंतुलन।
7. संक्रामक रोग जैसे ब्रुसेलोसिस, कैम्पाइलोबैक्टिरियोसिस आदि
8. ब्याने के बाद जेर गिराने हेतु उसके अंतिम छोर पर कोई भारी वस्तु या पत्थर बांध देना। इससे कई बार अधूरी जेर टूट कर गिर जाती है।

जेर रूकने के लक्षण

1. पशु बैचेन रहता है एवं बार–बार जोर लगाता है
2. जेर लम्बे समय तक घुटनों से नीचे या जमीन तक लटकी रहती है
3. पशु के योनि द्वार से दुर्गंधमय स्राव निकलता रहता है
4. पशु चारा खाना एवं पानी पीना कम या बंद कर देता है
5. पशु के दूध उत्पादन में कमी हो जाती है
6. गर्भाशय संक्रमण का खतरा भी बढ़ जाता है जिससे पशु पुनः ग्याभिन नहीं हो पाती है।

चिकित्सकीय प्रबंधन

❖ बाजार में बहुत सी मुंह से दी जाने वाली दवाइयां उपलब्ध हैं जैसे यूटरोटोन, रिप्लेंटा पाउडर, यूट्रिवाइव, यूट्रासेफ, प्लेसेंटो आदि चिकित्सकीय सलाह से देनी चाहिए जो कि गर्भाशय संकुचन को बढ़ाकर जेर को गिराने में मदद करते हैं।

❖ ब्याने के बाद पशु का दूध जल्द से जल्द निकालना चाहिए।

❖ यदि फिर भी ब्याने के 8–12 घंटे के बाद जेर ना गिरे तो पशु चिकित्सक की मदद लेनी चाहिये जिससे वो उसे उचित तरीके से बाहर निकाल दें एवं अग्रिम उपचार दे सकें।

जेर ना रूके उसके लिये प्रबंधन

❖ ब्याने के लगभग एक माह पूर्व से पशु के खाने में लगभग 150–200 ग्राम तेल मिलाना चाहिये। तेल मूंगफली, सरसों का दे तो अधिक बेहतर है।

❖ ब्याने के तुंरत बाद 1/2 से 1 किलो गुड एवं अजवायन का काढ़ा दे तो भी जेर जल्दी गिरने में मदद मिलती है।

ब्याने के एक माह पूर्व से पशु के भोजन में खनिज मिश्रण मिलाना चाहिये, ताकि पोषक तत्वों का असंतुलन ना हो।

–डॉ. गौरव कुमार जैन, 8963076685,
वी.यू.टी.आर.सी., बाकलिया–नागौर

मई माह में पशु प्रबंधन कैसे करें

मई माह से लगभग पूरे राज्य में तेज गर्मी व लू का प्रकोप शुरू हो जाता है व वातावरण में नमी में कमी हो जाती है। साथ ही इस समय पानी की किल्लत के साथ हरे चारे का भी अभाव हो जाता है। इन सब कारणों से पशु स्वास्थ्य पर चौतरफा मार पड़ती है। अतः गर्मी के समय पशुपालक को अपने पशुओं का उचित प्रबंधन करना आवश्यक हो जाता है अन्यथा पशु तापघात, ग्रीष्म दस्त, निर्जलीकरण आदि का शिकार हो जाता है। गर्मी से दुधारू पशु व बोझा ढोने वाले पशु ज्यादा प्रभावित होते है। यदि इस समय उचित प्रकार से प्रबंधन न किया जाये तो पशु की मृत्यु भी हो सकती है। अतः पशु से बेहतर उत्पादन लेने व स्वास्थ्य के रख–रखाव के लिए पशुपालकों को निम्न उचित प्रबंधन करना चाहिए:

1. पशु को छायादार स्थान जैसे पेड़ अथवा छप्पर के नीचे बांधे।
2. यदि पशुओं को पशुधन में बाधंना हो तो स्वच्छ हवा का आवागमन सुनिश्चित करें व कम स्थान में ज्यादा पशु न रखें।
3. निर्जलीकरण से बचाव के लिए पर्याप्त मात्रा में पीने के लिए स्वच्छ व ठण्डा पानी उपलब्ध करायें।
4. लू व गर्म हवा से बचाव के लिए दोपहर के समय खिड़कियों में गीली टाट–पट्टी लगाई जा सकती है।
5. तेज गर्मी के समय पशुओं को बोझा ढुलाई व जुताई के काम ना लें, सिर्फ सुबह या शाम को ही पशु को काम में लेंवें।
6. लू लगने पर पशु को ठण्डे पानी से नहलाना चाहिए। यदि गर्मी में पशु अस्वस्थ दिखाई दे तो तुरन्त पशु चिकित्सक से मिलकर पशु का उपचार करायें।

– प्रो. ए. के. कटारिया
प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर, राजुवास (मो. 9460073909)

भैंस में सर्रा रोग

भारत विश्व का सबसे बड़ा दूध उत्पादक देश है, इस दूध उत्पादन में लगभग 50 प्रतिशत से ज्यादा दूध केवल भैंस वंश से प्राप्त किया जाता है। भैंसों की दूध उत्पादन क्षमता भले ही विदेशी या संकर नस्ल की गायों से कम हो परन्तु इनके दूध में मौजूद अधिक वसा की मात्रा तथा विदेशी गायों की अपेक्षा अधिक रोग प्रतिरोधक क्षमता इनको पशुपालन व्यवसाय के लिए लाभकारी सिद्ध करती है। भैंसों में भी कई जानलेवा बीमारियां होती है जिनमें से एक प्रमुख रोग है सर्रा। इस बीमारी में भैंसों में कम बुखार से लेकर तीव्र बुखार होता है तथा भैंस दिमागी लक्षण प्रदर्शित करती है। साधारणतयाः इस रोग की पहचान पशुपालकों के लिए मुश्किल हो जाती है। यह रोग भैंसों में दूध उत्पादन क्षमता को घटा देता है तथा भैंसों में मृत्यु दर को बढ़ा देता है जो कि पशुपालकों के लिए एक बड़ी आर्थिक हानि है।

सर्रा या ट्रिपैनोसोमियसिस रोग वाहक के द्वारा फैलाये जाने वाला रक्त परजीवी जनित रोग है जो कि गाय, भैंस, बकरी, भेड़, घोड़ा, ऊंट, सूअर, श्वान तथा अन्य पालतू व जंगली जानवरों में पाया जाता है। राजस्थान में यह मुख्य रूप से ऊंट, भैंसों तथा गायों में बहुतायत में पाया जाता है। ऊंटों में इस रोग को तिबरसा भी कहते हैं। भैंसों में यह रोग जानलेवा सिद्ध होता है क्योंकि पशुपालकों द्वारा रोग की सही पहचान नहीं हो पाती तथा साधारण दवाइयों से भैंसों का बुखार कम नहीं होता और सही उपचार के अभाव में पशु की मृत्यु भी हो सकती है।

1. रोग कारकः— यह रोग ट्रिपेनोसोमा इवान्सी (प्रोटोजोआ) नामक रक्त परजीवी के कारण होता है। यह एक कोशिकीय परजीवी रक्त तथा ऊतक द्रव में पाया जाता है। यह परजीवी अनेक घरेलू तथा जंगली जानवरों में सर्रा रोग उत्पन्न करता है।

2. रोग का फैलावः— इस रोग का फैलाव मक्खियों द्वारा होता है जो कि मुख्यतः टेबेनस तथा स्टोमोक्सी प्रजाति की होती है। यह रोग मुख्यतः बरसात या उसके पश्चात ज्यादा होता है क्योंकि उस समय मक्खियों का प्रकोप अधिक होता है लेकिन मक्खियों की अधिकता की वजह से यह वर्ष पर्यन्त हो सकता है। यह रोग भैंस वंश में सम्पूर्ण राजस्थान में पाया जाता है।

3. लक्षणः— इस रोग का उष्मायन काल भैंसों में 6—14 दिनों का होता है। यह रोग युवा भैंसों में अधिक घातक होता है तथा कमजोर या पूर्व रोग ग्रस्त पशुओं में अधिक होता है। यह रोग प्रएक्यूट, एक्यूट तथा क्रोनिक प्रारूपों में होता है।

1. प्रएक्यूट प्रारूपः— इस प्रारूप में भैंस 2—3 घण्टे में ही दम तोड़ देती है तथा तंत्रकीय लक्षण प्रकट करती है जिसकी वजह से कई बार अन्य रोगों का बहम हो जाता है जैसे सांप का काटना, एन्थ्रेक्स, जहरवाद या मस्तिष्क का ट्यूमर इत्यादि।

2. एक्यूट प्रारूपः— इस प्रारूप में भैंस में सुस्ती, लड़खड़ाती चाल, घबराहट, जानवर का खुद किसी कठोर वस्तु से टकराना, बार—बार पेशाब करना, शरीर में कम्पन, लार गिरना, 105° फॉरेनहाइट तापमान जैसे लक्षण प्रकट होते हैं तथा पशु की 6—12 से घण्टे में मृत्यु हो जाती है।

3. सब एक्यूट या क्रोनिक प्रारूपः— यह प्रारूप ही मुख्यतः भैंसों में ज्यादा पाया जाता है। इसके मुख्य लक्षण में प्रगतिशील एनीमिया, वजन घटना, कमजोरी, भैंस में गर्भपात, एकाएक तेज बुखार, शरीर के निचले हिस्सों (पैर, कमर और पेट) में तरल सूजन देखी जाती है। आंख झपकना, लसिका ग्रंथियों में सूजन, अंधापन, अति उत्तेजना, चक्कर आना जैसे तंत्रिका संकेत दिखायी देते हैं और पशु का सही उपचार ना हो तो 2 सप्ताह से 2 माह के मध्य भैंस की मृत्यु हो जाती है।

4. रोग का निदानः— पशुपालक से पूछताछ तथा रोग के लक्षणों के आधार पर इस रोग का पता लगाया जा सकता है। रक्त के परीक्षण में परजीवी का पाया जाना तथा हिमोग्लोबिन व पीसीवी में कमी भी इस रोग का प्रमुख निदैनिक गुण है। इस रोग का पता अनेक टेस्टों के द्वारा लगाया जाता है परन्तु भैंसों व गायों के लिए स्टिलबीमिडीन टेस्ट प्रमुखता से किया जाता है।

5. उपचार एवं बचावः— इस रोग से बचाव के लिए क्विनपाइरामाइन सल्फेट या क्लोराइड के द्वारा रोग निरोधी उपचार किया जाता है तथा पशु के रोग ग्रस्त होने पर उपचारात्मक इलाज सूरामीन या क्विनपाइरामाइन सल्फेट के द्वारा पशु चिकित्सक द्वारा किया जाता है। रोग की पहचान तथा सही समय पर उपचार बहुत जरूरी है अन्यथा पशु का बचना मुश्किल हो जाता है।

6. नियंत्रणः— इस रोग के नियंत्रण के लिए मक्खियों का नियंत्रण बहुत जरूरी है। पशुशाला में पर्याप्त सूर्य का प्रकाश तथा हवा का आवागमन उपलब्ध होना चाहिए।पशु के बाड़े में साफ—सफाई रखना चाहिए तथा पशुशाला के आसपास कीटनाशक का छिड़काव करना चाहिए। अगर निकटतम पशुशालाओं या आसपास के इलाकों में रोग का असर हो तो पशुचिकित्सक से सलाह लेनी चाहिए।

—डॉ. विक्रम सिंह देवल, डॉ. अतुलशंकर अरोड़ा,
प्रो. ए.पी. सिंह, राजुवास, बीकानेर

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–मई, 2019

पशु रोग	पशु/पक्षी प्रकार	क्षेत्र
खुरपका एवं मुँहपका रोग	गाय, भैंस, बकरी, भेड़	भरतपुर, दौसा, बाँसवाड़ा, श्रीगंगानगर, जयपुर, झुंझुनू, सवाई–माधोपुर, धौलपुर, चूरू, अजमेर, बीकानेर, हनुमानगढ़, अलवर
पी.पी.आर. रोग	बकरी	सवाई–माधोपुर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, पाली, सिरोही, जयपुर, चूरू, सीकर, नागौर
गलघोंटू (इन दिनों वर्षा के साथ)	भैंस, गाय	अलवर, धौलपुर, जयपुर, सवाई–माधोपुर, भीलवाड़ा, सीकर, चित्तौड़गढ़, राजसमन्द, पाली, बून्दी, झुंझुनू, टोंक, हनुमानगढ़, कोटा, बारां
ठप्पा रोग	गाय, भैंस	जयपुर, हनुमानगढ़, बीकानेर, जैसलमेर, राजसमन्द, पाली, चित्तौडगढ, सीकर, श्रीगंगानगर
बॉटूलिज्म	गाय	जैसलमेर, जोधपुर, बीकानेर, बाड़मेर, नागौर
न्यूमोनिक पास्चुरेलोसिस	गाय, भैंस, भेड़, बकरी	अलवर, टोंक, जयपुर, बीकानेर, हनुमानगढ़, श्रीगंगानगर, जालौर, सीकर
फड़किया रोग	भेड़, बकरी	सवाई–माधोपुर, बाँसवाड़ा, जयपुर, बीकानेर, कोटा, श्रीगंगानगर, धौलपुर, हनुमानगढ़, भीलवाड़ा, बारां, सीकर
सर्रा रोग	भैंस, ऊँट	धौलपुर, बाँसवाड़ा, हनुमानगढ़, बून्दी, अनूपगढ़, बीकानेर, जैसलमेर, बाड़मेर, भरतपुर, सीकर
अन्तः परजीवी– गोलकृमि, पर्णकृमि	गाय, भैंस, भेड़, बकरी,	बून्दी, चित्तौडगढ़, बाँसवाड़ा, धौलपुर, बीकानेर, कोटा, श्रीगंगानगर, बारां,
खुजली	ऊँट, भेड़, बकरी	झुंझुनू, बीकानेर, श्रीगंगानगर, जैसलमेर, टोंक, जयपुर, अलवर, बाड़मेर, जोधपुर
रानीखेत रोग	मुर्गियां	अजमेर, जयपुर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, अलवर, कोटा
इन्फेक्शियस ब्रोंकाइटिस	मुर्गियां	अजमेर, जयपुर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, अलवर, कोटा
तापघात व निर्जलीकरण	सभी पशु–पक्षी	समस्त राजस्थान

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. राकेश राव, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, प्रो. ए.के. कटारिया, प्रभारी अधिकारी, अपेक्स सेन्टर एवं प्रो. अन्जु चाहर, विभागाध्यक्ष, जनपदकीय रोग विज्ञान एवं निवारक पशु औषध विज्ञान विभाग, वेटरनरी कॉलेज, राजुवास, बीकानेर।
फोन– 0151–2543419, 2544243, 2201183, टोल फ्री नम्बर 18001806224

सफलता की कहानी

पशुपालन से नारायणसिंह ने पकड़ी एक नई राह

राजस्थान राज्य में कृषि किसानों के लिए एक चुनौती भरा व्यवसाय है क्योंकि यह वर्षा आधारित है। इससे कृषकों का जीवन बहुत प्रभावित होता रहा है। इस परिस्थिति में पशुपालन एक सर्वोत्तम एवं सफल व्यवसाय है। वर्तमान में तमाम शिक्षित बेरोजगारों के लिए पशुपालन एक आय का साधन है। नारायणसिंह पुत्र किशोर सिंह, गांव–माकरोड़ा जिला सिरोही एक शिक्षित पशुपालक हैं जो कि आज ऐसे बहुत सारे शिक्षित बेरोजगार युवाओं के लिए एक उदाहरण बने हैं। दूध का व्यवसाय पशुपालक के लिए उनके आय का एक मुख्य स्त्रोत है। इसी दृष्टिकोण से नारायणसिंह ने कृषि के साथ–साथ भैंसों का पालन कर दुग्ध उत्पादन में सफलता पायी है। वर्तमान में इनके पास कुल 55 भैंसें और 150 बीघा जमीन है। नारायण सिंह पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सिरोही से लगातार सम्पर्क कर उनके द्वारा दिये जा रहे पशुपालन प्रशिक्षण शिविरों में भाग लेकर उचित जानकारी प्राप्त करते है। वहां मिले परामर्श के अनुसार पशुओं में पशुआहार एवं मिनरल मिक्सर का महत्व, बीमारियां, पशु प्रजनन सम्बन्धित विकार, पशुओं में नस्ल सुधार, टीकाकरण एवं डीवर्मिंग के उपायों से ज्यादा दूध उत्पादन कर पशुपालन में सफलता पाई है। रोजाना लगभग 200 से 250 लीटर दूध का उत्पादन कर लेते हैं। दैनिक उत्पादित दूध को नजदीकी डेयरी एवं शहर के लोगों को उपलब्ध कराते हैं। इस प्रकार इनकी वार्षिक आय औसतन 10–12 लाख रू. हो जाती है, इसके साथ–साथ कृषि कार्य कर एक सफल किसान एवं पशुपालक के रूप में जाने जाते हैं। इसी प्रकार कई गांव के युवा शिक्षित बेरोजगार पशुपालक के रूप में उभरते नजर आ रहे हैं जिनके लिए ये एक प्रेरणा के स्त्रोत हैं।
सम्पर्क–नारायणसिंह, मो. नं. 9975895678

निदेशक की कलम से...

पशुओं में लक्षणों के आधार पर स्वस्थता की जांच

प्रिय, किसान एवं पशुपालक भाइयों और बहनो !

पशुपालक अपने पशुओं के व्यवहार तथा बाह्य निगरानी द्वारा उनके स्वस्थ होने की जानकारी ले सकता है। पशु चुस्त नजर आए और उसकी आंखें, साफ, बड़ी–बड़ी व चमकदार होती है तो यह उसके स्वस्थ होने का संकेत है। थूथन गीला एवं मुलायम होना तथा दुर्गन्ध रहित ठीक से बंधा हुआ गोबर होना भी सकारात्मक लक्षण है। पशु रूचि से आहार ग्रहण करता है और पेशाब का रंग प्रायः सफेद हो तो समझें वह स्वस्थ है। तापक्रम, श्वास क्रिया व धड़कन का समान्य होना भी स्वस्थ होने का संकेत है। गाय में 38.6° सेन्टीग्रेड व भैंस में 38.4° सेन्टीग्रेड तापक्रम सामान्य होता है। पशु का सुस्त व गर्दन लटकाए बैठे रहना, आंखों से स्राव या गड्ढ़े में धंसी होना बीमारी का लक्षण है। थूथन का सूखा व कड़ा होना, पशु का गोबर दुर्गन्ध युक्त व सूखा एवं सख्त अथवा पतला म्यूकस मिला होना, सामान्य स्वास्थ्य नहीं है। आहार के प्रति अरूचि, पेशाब का प्रायः गाढ़ा पीला एवं म्यूकस मिला होता है तो बीमारी का संकेत माना जाता है। बढ़ा हुआ शरीर तापक्रम और असामान्य (तीव्र गति से होना) श्वास क्रिया व धड़कन का होना भी अच्छे लक्षण नहीं होते। पशुओं को स्वस्थ रखने के लिए पशुचिकित्सकों द्वारा दी गई सलाह के अनुसार टीकाकरण करवाना चाहिए। टीकाकरण के समय कुछ ध्यान देने योग्य हिदायतों की पालना किया जाना जरूरी है। टीकाकरण के समय पशु पूर्णतया स्वस्थ होना चाहिए। पशु का टीकाकरण होने तक टीके को कंपनी द्वारा सुझायी गयी कोल्ड चैन में रखना अत्यन्त आवश्यक है। वैक्सीन निर्माता द्वारा सुझायी गयी वैक्सीन की मात्रा एवं पशु को वैक्सीन लगाने का सही तरीका ही अपनायें। टीकाकरण कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए यह आवश्यक है कि उस क्षेत्र के कम से कम 80 प्रतिशत पशुओं का उस बीमारी के लिए टीकाकरण किया जाये। टीकाकरण का उचित लाभ लेने के लिए पशुओं को टीकाकरण से 2–3 हफ्ते पहले कृमिनाशक औषधि से उपचारित किया गया हो। टीकाकरण को बीमारी फैलने की सामान्य अवधि से कम से कम एक माह पहले किया जाना चाहिए। यदि पशु गर्भावस्था की अन्तिम अवस्था में है तो उस पशु का टीकाकरण नहीं करवाना चाहिए।

-प्रो. अवधेश प्रताप सिंह, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर मो : 9414139188

मुस्कान !

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित ''धीणे री बात्यां'' कार्यक्रम

माह के प्रथम गुरूवार एवं तृतीय गुरूवार को प्रसारित **''धीणे री बात्यां''** के अन्तर्गत **मई 2019** में वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के वैज्ञानिकगण अपनी वार्ताएं प्रस्तुत करेंगे। पशुपालक भाई उक्त दिवसों को मीडियम वेव पर सायः 5:30 से 6:00 बजे तक इन वार्ताओं को सुनकर लाभ उठाएं।

वार्ताकार का नाम व विभाग	वार्ता का विषय	प्रसारण तिथि
डॉ. मनीष अग्रवाल **9414339028** पी.जी.आई.वी.ई.आर., जयपुर	भेड़–बकरियों में प्रमुख रोग, उनके लक्षण, बचाव और उपचार	02.05.2019
डॉ. मनोहर सैन **9829542066** कार्यक्रम समन्वयक, केवीके, नोहर	पशुओं से मनुष्यों में फैलने वाले प्रमुख रोग व बचाव	16.05.2019

संपादक
प्रो. अवधेश प्रताप सिंह
सह संपादक
प्रो. ए. के. कटारिया
प्रो. उर्मिला पानू
डॉ. नीरज कुमार शर्मा
दिनेश चन्द्र सक्सेना
संयुक्त निदेशक (जनसम्पर्क) से.नि.
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवामें

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. अवधेश प्रताप सिंह द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. अवधेश प्रताप सिंह